Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 01, January-March, 2026, pp. 63-68

# मत्स्य क्षेत्र के दुर्गों का धार्मिक पर्यटन (करौली के विशेष संदर्भ में)

**डॉ. अर्चना तिवारी[1*] एवं धर्मराज मीना[2]**

[1]सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: mdharm0100@gmail.com

***Citation**: तिवारी, अर्चना. एवं मीना, धर्मराज (2026). मत्स्य क्षेत्र के दुर्गों का धार्मिक पर्यटन (करौली के विशेष संदर्भ में). Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(01), 63–68.*

## सार

*करौली क्षेत्र का धार्मिक पर्यटन एवं यहाँ की वास्तुकला का संबंध यहाँ के सांस्कृतिक परिवेश के साथ घुला मिला है। यहाँ के मन्दिरों एवं डांग क्षेत्र का अपना अलग स्वरूप है। बीहड़ और दस्युओं के प्रभाव ने यहाँ की संस्कृति और वास्तुकला को प्रभावित किया है। फिर भी पर्यटन की असीम सम्भावनाऐं यहाँ विद्धमान है। गढ़मोरा का जल तीर्थ, त्रिकूटवासनी कैलादेवी, चम्बल अभ्यारण, रहस्यमयी किला तिमनगढ़, महावीरजी, मेहन्दीपुर बालाजी, मदनमोहन जी आदि के प्राचीन मन्दिर इसे विशिष्ट बनाते है। शोध का उद्‌देश्य यह स्पष्ट करना है कि करौली क्षेत्र की वास्तुकला और पर्यटन की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के माध्यम से इस क्षेत्र की उपेक्षित पहचान को एक नवीन दृष्टिकोण मिले।*

***शब्दकोशः** पुरावशेष, परम्परा संरक्षण, बीहड़, डाँग, आमलक, जलतीर्थ, जीरे खां की मजार, कीर्तिमुख, लकेश्वरी, दस्यु, अनार खो।*

## प्रस्तावना

मत्स्य क्षेत्र गौरवशाली इतिहास से समृद्ध रहा है। यह क्षेत्र आदिकाल, वैदिकयुग, महाभारत काल एवं मौर्यकाल की अवस्थाओं का धारक रहा है। महाभारत काल एवं मौर्यकाल में इसके स्वर्णिम इतिहास का उल्लेख मिलता है। मत्स्य क्षेत्र के भौगोलिक सीमांकन में अलवर और जयपुर से सटी हुई अरावली पहाडियों का विस्तार विन्ध्य पर्वत क्षेत्र तक उल्लेखित मिलता है। आधुनिक राजस्थान में मत्स्य क्षेत्र का सीमांकन भी अलवर, भरतपुर, करौली और धौलपुर के साथ इसकी राजधानी विराटनगर का उल्लेख भी शामिल है।[1] इस क्षेत्र के पुरावशेषों में किले अपना विशेष महत्व रखते हैं चूंकि ये उस क्षेत्र की शासन व्यवस्था की धुरी के रूप में कार्य करते थे। साथ ही धर्म और संस्कृति के संवाहक दूत के रूप में एक मुख्य भूमिका निभाते हैं। दुर्गों का सुरक्षा और संरक्षण से सीधा संबंध रहा है। एक मजबूत राज्य की पहचान में दुर्ग सदैव एक प्रतीक के रूप में रहे हैं। मनु, शुक्र और कौटिल्य के साथ बहुत से विद्वानों ने इनकी महत्ता को चरितार्थ किया है।[2] आज यूनेस्को और पुरातत्व विभाग के साथ अन्य एजेंसियाँ भी इन दुर्गों के संरक्षण पर ध्यान दे रहीं है। करौली जिसकी अपनी अलग भौगोलिक और धार्मिक पहचान है। करौली जिसका पूर्व नाम कल्याण पुरी था, इसके संस्थापक राजा अर्जुन पाल थे। जो अपना

*[*] Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

सम्बन्ध यदुवंशियों से जोडते हैं, ने 1348 ई. में इस शहर की स्थापना की थी। इस प्रकार ब्रज प्रदेश से इसका धार्मिक–सांस्कृतिक संबंध रहा है। करौली शहर अपने दुर्ग और महल के साथ–साथ दुर्गम बीहड़ों, पहाड़ों में बसे अपने किलो से भी इतिहास को समृद्ध किये हुए है। करौली का प्राचीन कल्याण जी का जो शाही महल के सामने पूर्व दिशा में स्थित है। आज भी अपने गौरवशाली इतिहास के साथ विराजमान है।शहर का नाम करण कल्याण पुर इसी के कारण हुआ जो कालान्तर मे करौली हो गया। यह शहर भद्रावती नदी के किनारे स्थित होने के कारण इसे भद्रावती नाम से भी जाना जाता था। यहाँ का शाही महल अपनी दुर्लभ भित्ति चित्रकारी, वास्तुकला के अनूठे स्थापत्य के साथ में धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीकों को समेंटे हुए है। इसमें गुरु द्वारा, मस्जिद, मंदिर और चर्च का वास्तु एवं संरचनाएँ इन धार्मिक भावों की आज भी साक्षी हैं। इसी शाही निवास स्थल केपास ही सटा मदन मोहन जी का मंदिर है, जो करौली शहर को वृन्दावनमय बनाता है। प्रतिमाह यहाँ अमावस्या को स्थानीय लोगों की आस्था का मेला लगता है। यह शाही महल और मंदिर भद्रावती नदी के किनारे स्थित है। मदन मोहन मंदिर में श्री राधा मदन मोहन की प्रतिमा के अलावा,श्री गोपाल जी, राधा और ललिता जी की प्रतिमायें विराजमान हैं। जन्माष्टमी, राधा अष्टमी और होली के समय यहाँ वृन्दावनतुल्य माहौल होता है। मंदिर का सीधा संबंध वैसे भी वृंदावन से है क्योंकि मदन मोहनजी की प्रतिमा वृंदावन से जयपुर और वहाँ से करौली गोपाल जी द्वारा लायी गई थी। वृंदावन में अभी भी इनका मंदिर है। करौली शहर में 700 से अधिक मंदिर और 15 मस्जिदें बताई जाती हैं। जिनमें 400 कृष्ण मंदिर बताये जाते हैं। इससे यह लघु वृन्दावन बन जाता है।[3] यह मंदिर करौली के चार धाम कहे जाने वाले कैलादेवी, महावीरजी, मेंहन्दीपुर बालाजी में शामिल है। वर्तमान में कृष्णा सर्किट से जुडकर यह और भी भव्य होने जा रहा है। इसी मंदिर परिसर में अन्य छोटे मंदिर भी विराजमान हैं। मदनमोहन जी का मुख्य मंदिर अपनी आठ झांकियों और अनोखे लड्डू कच्चौडी भोग प्रसाद के किए स्थानीय आकर्षण का केन्द्र है। साथ ही करौली रियासत का प्रतीक चिन्ह धार्मिक आस्था और राजसी परंपरा का प्रतीक भी है। इसमें भेड़ सरलता, सिंह साहस, गाय करुणा, नगाड़ा युद्ध और चंद्रमा शांति काद्योतक है, जबकि हिरण सौंदर्य को दर्शाता है। इसके नीचे अंकित वाक्यांश "श्री मदन मोहन जी सदा सहाय" रियासत की भगवान श्रीकृष्ण के प्रति गहरी भक्ति को प्रकट करता है।[4]

भारतीय–मुगल वास्तु कला का प्रभाव शाही महल और मंदिर दोनों पर दृष्टिगत होता है। सालभर में दो बार ही इनकी झांकी गर्भगृह से बाहर आती है। धुलंडी और हरियाली तीज पर इस झूला झांकी के दर्शन हेतु शहरवासी व ग्रामवासी हज़ारों की संख्या में जुड़ते हैं। मान्यता के अनुसार गोविंददेव जी, मदनमोहन जी, गोपीनाथ जी के एक दिन में दर्शन से मोक्ष लाभ की मान्यता है। इन तीनों की मूर्तियों का एक ही पाषाण से निर्माण माना गया है। करौली से सटा पाँचना बाँध, अंजनि माता मंदिर और डाँग का मानसूनी नजारा पर्यटकों को हमेंशा लुभाता है। करौली के मासलपुर तहसील में स्थित तिमनगढ जो अपने रहस्यों से आमजन में आज भी रोचक प्रसंगों में बना हुआ है। यहाँ का प्राचीन शिव मंदिर और विष्णु मंदिर जो कि सागर जलाशय की मेंड पर बने हुए हैं। सागर जलाशय के निकट बाबा गोमती दास का स्थान है जो रौली और हिंडौन में पूजनीय है। इनके तपोस्थल के रूप में सागर तालाब के पास की अनार खो प्रसिद्ध है।[5] किले का मुख्य द्वार तिमंजिला है। यहाँ से अन्दर जाने पर आमजन के द्वारा भी उत्खनित स्थानों को देखा जा सकता है। सीढ़ियों तक को मूर्तियों के लालच में खोद दिया गया है। तिमनगढ़ में नटनी के श्राप द्वारा विनाशकी किवदंती आज भी प्रसिद्ध है। शिल्प और नक्काशी का बेजोड़ संगम यहाँ के भग्न अवशेषों में दिखाई देता है। मूर्तियों में दक्षिणी वास्तुकला का प्रभाव दिखाई देता है। मूर्तियों की तस्करी के कारण इस अनमोल धरोहर को बहुत नुकसान पहुंचा है।[6] वामन नारायण घीया जैसे तस्करों का संबंध यहीं से बताया जाता है। आज ये विरासत बदहाल है। यहाँ जैन, बौद्ध, हिंदू, इस्लामिक, वास्तु के अवशेष उपलब्ध हैं। किले के भीतर मानो पूरा देवनगर ही बसा हो। पचास से अधिक मंदिरो के साक्ष्य भग्न रूप में यहाँ देखे जा सकते हैं। गंधर्व और मिथुन मूर्तियां खजुराहो की याद दिलाती हैं परन्तु ये मूर्तियाँ क्षत विक्षत है। पुरातत्व विभाग की उदासीनता यहाँ दृष्टव्य है।[7]

यह दुर्ग अपनी मूर्तियों की चोरी को लेकर चर्चा में रहा है। पुरातत्व विभाग का यहाँ कोई संरक्षण आज भी दिखाई नही देता। मुस्लिम प्रशासकों द्वारा इसके निर्माणमें मूर्तियों के खंडित अवशेष का इस्तेमाल किया हुआ प्रतीत होता है। सागर जलाशय पर मूर्तियों के खंडित अवशेष स्थित हैं। साथ ही किले की प्राचीर से सटा हुआ एक जैन मंदिर है जहाँ महावीर स्वामी की 25 फुट की प्रतिमा विराजमान है। पारस पत्थर की किंवदन्ती प्रचलित है। यहाँ का राजा लोगो से कर के रूप में धातुओं की वस्तु लेता था। आज भी सागर जलाशय में उसके होने का अनुमान लोग लगाते रहते हैं। इमारतों पर उकेरी हुई मूर्तियों में देवता और नर्तकी के रूप आज भी देखे जा सकते है।[8] बहादुरपुर गढ़ जो करौली से 15–16 किमी की दूरी पर है,यहाँ मूर्तियों पर आघात बताते हैं कि मुस्लिम आक्रांताओ ने यहाँ लूट और विध्वंस किया था। इस किले तक पहुंचने के लिए आज भी कोई सुगम मार्ग नहीं है। किले की प्राचीर में देवालय बने हुए हैं। जो पूर्ण रूप से क्षत विक्षत है यह किला आज भी गुमनामी का शिकार है। अतिक्रमण से ग्रस्त है। बीच के आंगन को अब खेत बना दिया गया है। कोई भी मंदिर स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता।मुख्य द्वार पर गज और अश्व, फूल–पत्ती और सूर्य–चन्द्र उत्कीर्ण है। भारतीय मुगल वास्तुकला का साक्षी यह दुर्ग आज पूर्ण रूप से क्षत विक्षत है। यह दुर्ग भद्रावती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ पर सलामी देते चमत्कारी हनुमान जी कामंदिर जो कि खंडित प्रतिमा के साथ स्थित है।स्थानीय मान्यतानुसार इस मूर्ति को औरंगजेब के द्वारा तोडा गया था। यहाँ प्रेत बाधा से पीड़ित लोगो का इलाज किया जाता है। मूर्ति स्थानीय लाल पत्थर से निर्मित है।इसका पूर्व नाम वेकुंठपुर और गोपालपुर बताया जाता है। गोपाल जी की प्रतिमा यहा 65 वर्षों से विराजित रही थी।

करौली क्षेत्र में स्थित कुसाँय गढ़ी जो कि अब खंडहर है। कभी सात घोड़ों की जागीर हुआ करती थी। इस चार बुर्जों वाली गढ़ी को गंगापुर–हिंडौन मार्ग पर आज भी देखा जा सकता है। वर्तमान में इस क्षत–विक्षत गढ़ी में खुले आसमान के नीचे हनुमान जी की पूजा की जा रही है। इसके किनारे से पानी की नहर जाती है जिसके किनारे भी प्राचीन शिवालय और हनुमान मंदिर स्थित है। कुसाँय से एक जैन तीर्थंकर की मूर्ति मिली है जो पद्मासन में विराजमान है। यह 11वीं सदी की है। वर्तमान में राजकीय संग्रहालय भरतपुर में स्थित है।[9] करौली के डांग क्षेत्र में स्थित रामठरा किला जो वर्तमान में एक आवासीय होटल के रूप में भी संचालित है। यहां पर किले की तलहटी में और इसके आस–पास लगभग इक्यावन मंदिरो की किवदंती है जो सच प्रतीत होती है। बहुत सारे मंदिरो के अवशेष देखे जा सकते है। गिरि दुर्ग के रूप में यह किला क़ालीसिल बांध के पास की पहाड़ी पर बना हुआ है। यह किला जागीरी किले के रूप में अपनी पहचान रखता है। क़ालीसिल से निकलने वाली नहर और तलहटी में नील कमल उगते हैं जो इसे विशिष्ठ बनाते हैं। पर्यटकों के लिए जल भ्रमण भी उपलब्ध है। तलहटी में स्थित शिव मंदिर में लिंग के स्थान पर शिव की मूर्ति जो अपना वक्रमुख लिए हुए विराजमान है। मंदिर की मूर्ति को लेकर किवदंती है कि ये दिन में तीन बार रंग बदलती है। इस मंदिर और किले पर निजी संपत्ति का सूचना पट्ट लगा हुआ है। अतः स्थानीय पर्यटन तो उपेक्षित है बाकी पूँजीपति और विदेशी लोग इस जगह का आनन्द ले सकते हैं। इसी प्रकार एक और जागीरी किला अमरगढ जो छोटी पहाड़ी पर स्थित है। यह भी देशी विदेशी सैलानियों हेतु खुला हुआ है। किले में सुंदर नक्काशी और भित्तिचित्र बने हुए है। यह भी रामठरा की तरह जागीरी ठिकाना है। परिसर में ठिकानेदार के स्थानीय पूजागृह बने है। सपोटरा क्षेत्र में ही भरतून की गढ़ी है जहाँ प्राचीन भैरव मंदिर स्थित है। यह गढ़ी अब क्षत–विक्षत है। यहां पर बहने बाला एक झरना लोक पर्यटन का आकर्षण का केन्द्र रहता है। इस गढ़ी के शासक करौली के राज परिवार से संबंधित रहे हैं। स्थानीय लोग इसे अक्षय गढ़ के नाम से भी जानते है। ये चार जगीरी ठिकाने भरतून, सपोटरा, अमरगढ़ और इनायती थे।सपोटरा का किला जो कि एक गिरी दुर्ग का उदाहरण है इसमें वर्तमान में कोई भी धार्मिक अवशेष दिखाई नहीं देते हैं। पूरा किला क्षत विक्षत है किले के शेष तीन बुर्ज अभी जर्जर हालत में हैं। यहाँ धार्मिक स्थान के रूप में स्थानीय लोक देवी लकेश्वरी जो टाटू मीना गोत्र की कुल देवी है, का मंदिर बना हुआ है।साथ ही यहाँ के 12 गाँव जो टाटू गोत्र के है उनके आराध्य नसिर देव का भी मंदिर है। जिनकी सर विहीन प्रतिमा है। किवदंती के अनुसार इनका धड़ यहाँ

पूजा जाता है तो इनका सिर गोठरा गाँव में पूजा जाता है। ये युद्ध में शहीद हुए थे,क्षेत्रीयस्तर पर पूजनीय है।[10] इसी प्रकार मंडरायल दुर्ग के धार्मिक स्थलों के रूप में मुस्लिम स्थापत्य के साथ हिन्दू मंदिरों के अवशेष हैं। किले के भीतरी भाग में प्राचीन शिवलिंग स्थापित है।मंदिर नागर शैली में बना है। शिखर पर आमलक (आँवला जैसी आकृति) और कलश अंकित हैं। हनुमान मंदिर प्रवेशद्वार के निकट स्थित है। यह वर्तमान में स्थानीय जन के लिए पूजा–अर्चना का प्रमुख केंद्र है। यहाँ की मूर्तियों में लोकशैली का प्रभाव अधिक है। यह दुर्ग पूर्वाभिमुख है।

किले के आसपास कुछ स्थानों पर जैन मूर्तियों के अवशेष मिले हैं। यह दर्शाते हैं कि यहाँ कभी जैन समुदाय का भी धार्मिक प्रभाव रहा होगा। किले की दीवारों और मंदिरों के स्तंभों पर कुछ शिलालेख अंकित पाए गए हैं।[11]

ये शिलालेख मुख्यतः संस्कृत और अपभ्रंश लिपि में हैं, जिनमें उस समय के शासकों तथा धार्मिक अनुष्ठानों का उल्लेख मिलता है। शिलालेखों से यह भी ज्ञात होता है कि करौली और ग्वालियर के शासक इस किले को धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते थे। यह दुर्ग अपनी विशेष स्थिति के कारण ग्वालियर दुर्ग की कुँजी माना गया है। तोरण द्वारों पर गणेश, लक्ष्मी–नारायण, नृत्यमुद्रा में अप्सराएँ और कीर्तिमुख (मुखाकृति) की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। मूर्तियाँ अधिकतर बलुआ पत्थर से बनी हैं। कई मूर्तियों में स्थानीय लोकशैली के साथ–साथ ग्वालियर तोमर कला का प्रभाव दिखता है। किले के धार्मिक स्थलों पर आज भी शिवरात्रि, रामनवमी और नवरात्र जैसे पर्वों का आयोजन होता है। स्थानीय समाज इसे अपनी आस्था का केंद्र मानता है। किला केवल सामरिक गढ़ नहीं रहा, बल्कि यह धर्म और संस्कृति का संगम स्थल भी रहा है। धार्मिक सद्भाव के रूप में जैन, हिंदू और मुस्लिम इमारतें है। इसी प्रकार मासलपुर तहसील में फतेहपुर के किले में अब स्थानीय लोगों के धार्मिक स्थल देखे जा सकते हैं। किले की इमारतें  और प्राचीर स्थानीय लाल पत्थर से बने हैं। दुर्ग तक जाने का मार्ग बड़ा दुर्गम है।[12]

इसी प्रकार पुरावशेषों और किवदंतियो को मिलाया जाए तो करौली जिले का एक गाँव परीता है जहाँ प्राचीन महलनुमा दुमंजिला संरचना विद्यमान है। स्थानीय लोगो से साक्षात्कार करने पर उन्होंने बताया कि इसमें प्राचीन मदन मोहन मंदिर भी था। जो करौली के मदन मोहन मंदिर से सम्बन्ध रखता है। मदन मोहन जी की मूर्ति को पाँच दिन यहाँ रुका हुआ बताया जाता है। जिसकी याद में ये महलनुमा संरचना समकालीन राजा गोपाल जी ने बनवाई थी। वर्तमान में यह अतिक्रमण से ग्रस्त है।इसी गाँव  की एक पहाड़ी पर 25 गाँवो के आराध्य देव बडिये बाबा का स्थान है जोकि भाद्रपद अमावस्या पर अपने मेंले,दंगल और गाँव में बनने वाले प्रसाद खीर पुआ के लिए जाना जाता है। इस गाँव का कोई भी व्यक्ति घोड़े पर नहीं बैठता क्योंकि वह बडिये बाबा की सवारी का सम्मान करता है। एक नष्टप्रायः गढी के साक्ष्य इसी गाँव से सटे वीरबल का बडौदा (मीना बडौदा) में मिलते हैं। वर्तमान में इस गढ़ी में विद्यालय संचालित है। नामई नदी के किनारे बसे इस गाँव में धार्मिक आस्था के कई प्राचीन मंदिर है। इनमें लकेश्वरी माता जो टाटू मीना गोत्र की कुल देवी का मंदिर है। साथ ही सकलू देव का थान है जो बैसला गोत्र के बारह गुर्जर गांवो के आराध्य के रूप में मान्यता रखता है। पूर्व में यह गाँव अपनी न्याय प्रियता और वीर स्वभाव के रूप में पहचान रखता था। तोपों के गाँव के रूप में स्थानीय जन में पहचाना जाता है।[13]

इसी प्रकार इनायती की गढ़ी और रानेटा की गढ़ी में अब स्थानीय लोगो के लोक आस्था के केन्द्र बने हुए हैं। करौली के प्राचीन शहर के रूप में हिंडौन जो हिरणयकश्यप की नगरी के रूप में विद्यमान है। यहाँ एक प्राचीन दुर्ग जो जमीन से थोड़ी ऊंचाई पर बना हुआ है। यहाँ नृसिंह अवतार से संबंधित गुफा जिसे नृसिंह गुफा के रूप में मान्यता प्राप्त है जहाँ हिरणकश्यप का बध किया गया था (करौली–हिंडौनमार्ग में) स्थित है। प्रहलाद कुण्ड के साथ आज एक आधुनिक पार्क भी बनाया गया है। ऐतिहासिक और पौराणिक दोनों तथ्यों से इस शहर की मान्यता रही। भागवत पुराण में नृसिंह अवतार तो महाभारत काल के हिडिंब राक्षस और हिडिंबा राक्षसी के साथ भीम के विवाह और संघर्ष को जोड़ा गया है। इसी से भीम को घटोत्कच नामक पुत्र की प्राप्ति हुई जो महाभारत के युद्ध में मारा गया। शहर में लाल पत्थरों का बहुतायत से उपयोग है। गोमती धाम और जलसेंन भी आकर्षक है।

पुराणों में वर्णित हिण्डवन अपभ्रश होकर हिंडौन हो गया। अकबर कालीन एक फारसी लेख मिलता है जो यह बताता है कि यह उसके अधीन हिस्सा रहा है। लेकिन पुरातत्व विभाग की ओर से इस प्रकार के सूचना पट्टों का अभाव हैं। इसकी जानकारी का इतिहासदन्तकथाओ और आस्था से जुडा है।[14] इसी प्रकार करौली क्षेत्र मैं राजा मोरध्वज की नगरी के रूप में विख्यात गढमोरा जहाँ मकरध्वज मंदिर (हनुमानजी के पुत्र का एकमात्र), राधा गोपाल मंदिर, केदारनाथ की गुफा, नारायणी माता मंदिर, देवनारायण मंदिर अपने भव्य स्वरूप में स्थित है। श्रावण के महीने में यह स्थान जलतीर्थ बन जाता है। यहाँ बने तीनो कुंड वर्ष भर सैलानियों और यात्रिओं के लिए हमेंशा खुले रहते हैं।साम्प्रदायिक सद्भाव के रूप में यहाँ एक मदीना कुंड भी बना हुआ है। देवनगरी गढ़मोरा अपने झरने, कुंड और किले के गौरवपूर्ण इतिहास के साथ रंग–बिरंगे मकर संक्रांति के मेंले के लिए जाना जाता है। यह नादौती तहसील में है जो करौली जिला मुख्यालय से पश्चिम में लगभग 75km की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर नीझर (जमीन के अंदर से पानी का अपने आप आना) प्रसिद्ध है। यह अपनी पान की खेती के लिए जाना जाता रहा है। सदानंद जी का एक मंदिर किले के परकोटे में बालाजी के पास बना है। यहाँ पर सतयुग,द्वापर, त्रेता और कलयुग के विष्णु जी के अवतारों की मूर्तियां स्थित हैं। जिसमें कलयुग के अवतारी के रूप में सदानंद जी को दिखाया गया है। गढ़मोरा के महल अब जीर्ण–शीर्ण स्वरूप से अभी मरम्मत के माध्यम से नये स्वरूप में आ रहे है। सभी में स्थानीय पत्थरों का उपयोग है। जैन मंदिर भी किले के एक हिस्से के रूप में जीर्ण–शीर्ण रूप में स्थित है। यह नगरी कोढ़ रोग के मामले में रोग–दोष दूर करने वाली चमत्कारी बताई जाती है। कृष्णभक्त राजा मोरध्वज की पूजा भी किले अंदर की जाती है। राजा मोरध्वज की भगवान द्वारा परीक्षा, उसके पुत्र का चीरा जाना यहाँ की लोकगाथा में उनके गुणगान को अमर कर रही है।[15] स्थानीय पर्यटन में करौली क्षेत्र के मोठियापुरा के मंदिर, जो ग्रामीण पर्यटन हेतु जाने जाते है। इस गढ़ में तिमंजिला संरचनाएं है जो अब खंडहर हो रहे है। एक यज्ञशाला, दुर्गा देवी मन्दिर, हनुमान मंदिर, गणेश मंदिर विराजमान है। रामपुरा फतेहपुर और मोठियापुरातीनों गाँवो के बीच की पहाड़ी पर स्थित है। यह गढ़ करौली जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी की दूरी पर स्थित है।[16]

करौली जिले में एक ऊँटगिरी दुर्ग है। यहाँ लोधी राजपूत जाति का शासन रहा है। इसमें छः तालुके, 33 गाँव, 16 खालसे रहे थे कुल क्षेत्रफल 309 वर्गमील था। करौली रियासत के इस किले पर यादव एवं मीना जाति का शासन रहा है। प्राचीन मंदिरों के अवशेष दिखाई नहीं देते हैं। किले के आस–पास पहुँचने का मार्ग अवरुद्ध है। क्षत विक्षत वास्तु खंडों में देव मूर्तियां पाई गयी है। दुर्ग में 7 मंदिर 2 टाँके एवं मुख्य द्वार पर गणेश प्रतिमा के अवशेष मिले हैं।[17] सपोटरा के पास स्थित काचरौदा की गढ़ी जो पहाड़ के तलहटी मेंस्थित है। यहाँ प्राचीन शिव एवं हनुमान मंदिर के साथ एक प्राचीन कुआँ भी स्थित है। यह किला जमीनी होने के साथ–साथ अपने दुमंजिला स्वरूप में स्थित है तथा इसमें वर्तमान में विद्यालय संचालित है।[18] इसी प्रकार करौली के नादौती से गंगापुर मार्ग पर स्थित शहर किले में बाँके बिहारी मंदिर (16वी सदी), शहरा माता मंदिर, सीताराम जी मंदिर, मुरलीधर मंदिर, राधाकिशन मंदिर स्थानीय पर्यटन की धुरी है।[19] स्थानीय पर्यटन में गढ़मोरा शिव मंदिर, केशव राय मंदिर, राजा मोरध्वज मंदिर अपना विशेष स्थान रखते है।[20] गुढ़ाचन्द्रजी का किला जो नादोती अलवर मार्ग पर स्थित है। यहाँ बलदाऊजी का मंदिर, चंद्र प्रभु जैन मंदिर एवं घटवासन मंदिर लोक पर्यटन का आधार है।[21] करौली रियासत के सपोटरा तहसील के गाँव जीरोता में अलाउद्दीन के सेनापति जीरे खां ने हम्मीर देव से हार जाने के कारण जिन्दा समाधि ले ली गई इस कारण इसका नाम जीरोता पड़ा। इसी पहाड़ी पर भगतराम बाबा की समाधि है जो सेनापति जीरे खां का दोस्त था और हम्मीर देव का सेनापति था।[22] पर्यटन के अन्य आकर्षणा में कैलादेवी मंदिर एवं अभयारण्य और राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य, राहू घाट, रणगमा तालाब आदि हैं। इसके अतिरिक्त नन्द भौमिया का मंदिर है जो आम जन में कैंसर, फोड़ा फुंसी आदि के इलाज के लिए जाना जाता है। गुमानो देवी करणपुर, वरबासन देवी आड़ा डूंगर सपोटरा,केदार गुफा कैलादेवी का प्रथम स्थल, बिजासन देवी खोहरी, बथुआ खोह का चामुंडा मंदिर बिलोणी सरमथुरा, जगदीश जी मंदिर कैमरी आदि शामिल है।

## निष्कर्ष

करौली क्षेत्र के किलों एवं मंदिरों से इस क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की संभावनायें मजबूत हुई है। धार्मिक पर्यटन ने स्थानीय लोगों और विदेशी महमानो को आकर्षित किया है। इस क्षेत्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इन एतिहासिक स्मारकों को संरक्षण प्रदान करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। यहाँ न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय पर्यटन से जुड़ी संभावनाएँ विद्यमान है। पूर्व में यह क्षेत्र दस्यु एवं तस्करी से प्रभावित रहा है। इस कारण भी इन स्मारकों को क्षति हुई है। इसी प्रकार अतिक्रमण, कब्जा एवं इनको अवैध रूप से निजी सम्पति बताए जाने के प्रयास निरंतर किये जा रहे हैं। राजस्थान की नवीनतम पर्यटन नीति में भी किलों को पर्यटकों के लिए और अधिक आकर्षक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस नीति का उद्देश्य पर्यटकों का ठहराव बढ़ाना और पर्यटन गतिविधियों का विस्तार करना है। इस क्षेत्र में देवी मंदिरों की अधिक मान्यता को देखते हुए पेनोरमा की संभावनायें है। पर्यटन विकास की श्रंखला में महावीर जी मंदिर पेनोरमा की घोषणा हो चुकी है। जिससे पर्यटकों को बढ़ावा दिया जा सके। करौली धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। बुनियादी ढांचे के विकास से यहां पर्यटन को और बढ़ाया जा सकता है। जो स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी होगा।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग 1997 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ–32
2. सी.एल.शर्मा, मत्स्य क्षेत्रका पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 2018 पृष्ठ–29
3. हरिचरण लाल गुप्ता, करौली राजपूताने का इतिहास, 2004 पृष्ठ–4
4. राजेश कुमार व्यास, सांस्कृतिक पर्यटन, 2009 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ–158 व 159
5. वेणु गोपाल शर्मा, करौली के आस्थाधाम, 2021 पृष्ठ–109
6. डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग 1997 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ–145 व 147
7. वेणु गोपाल शर्मा, करौली अतीत से वर्तमान, 2020 पृष्ठ–46
8. दैनिक भास्कर, 27 जुलाई 2021 पृष्ठ–3
9. साप्ताहिक भास्कर, करौली संस्करण, 14 जून 2022 पृष्ठ–2
10. राजकीय संग्रहालय भरतपुर के व्यक्तिशः अवलोकन से प्राप्त जानकारी, दिनाँक 09-09-2025
11. दामोदर लाल गर्ग, करौली राज्य का इतिहास, 2009 पृष्ठ–36
12. करौली और मंडरायल दुर्ग पर प्रकाशित पुस्तिका, राजस्थान पर्यटन विभाग जयपुर, 2018 पृष्ठ 48–49.
13. स्थानीय निवासियों से साक्षात्कार, दिनाँक 23-10-2025 नाम–श्रीराम, अजय
14. टाइम्स ऑफ इंडिया का लेख, दिनाँक 23-10-2019 पृष्ठ–05
15. राजस्थान जिला गजेटियर करौली 2022 आयोजना विभाग राजस्थान सरकार, पृष्ठ–803
16. पत्रिका न्यूज दिनाँक, करौली संस्करण, 01-01-2023 पृष्ठ–05
17. दामोदर लाल गर्ग, करौली – इतिहास के झरोखे से, पृष्ठ–44
18. करौली जिले के सपोटरा एवं कांचरौदा क्षेत्र के स्थानीय आम जन से मौखिक साक्षात्कार के आधार पर, नाम– बाबू लाल मीणा, पीटीआई सपोटरा दिनांक 26–12–2024
19. राजस्थान जिला गजेटियर करौली 2022 आयोजना विभाग राजस्थान सरकार, पृष्ठ–803
20. राजस्थान जिला गजेटियर करौली 2022 आयोजना विभाग राजस्थान सरकार, पृष्ठ–829
21. राजस्थान जिला गजेटियर करौली 2022 आयोजना विभाग राजस्थान सरकार, पृष्ठ–828
22. करौली हिंडौन भास्कर, 31 अक्टूबर 2025 पृष्ठ–17.


❑❑❑